सुमित्रानंदन पंत

सुमित्रानंदन पंत का जन्म सन् 1900 में अलमोड़ा जिले के रमणीय स्थल कौसानी (उत्तरांचल) में हुआ था । जन्म के छह घंटे बाद ही माता सरस्वती देवी का देहान्त हो गया । पिता गंगादत्त पंत कौसानी टी स्टेट में एकाउंटेंट थे । पंतजी की प्राथमिक शिक्षा गाँव में हुई और फिर बनारस से उन्होंने हाईस्कूल की शिक्षा पायी । वे कुछ दिनों तक कालाकांकर राज्य में भी रहे । उसके बाद आजीवन वे इलाहाबाद में रहे । 29 दिसंबर 1977 ई० में उनका निधन हो गया ।

पंतजी का आरंभिक काव्य प्रकृति प्रेम और शिशु सुलभ जिज्ञासा को लेकर प्रकट हुआ । उनकी आरंभिक रचनाएँ प्रकृति और सौंदर्य के प्रेमी कवि की संवेदनशील अभिव्यक्तियों से परिपूर्ण हैं ।

पंतजी प्रवृत्ति से छायावादी हैं, परंतु उनके विचार उदार मानवतावादी हैं । उन्होंने प्रसाद और निराला के समान छंदों और शब्द योजना में नवीन प्रयोग किए । पंतजी की प्रतिभा कलात्मक सूझ से सम्पन्न है, अतः उनकी रचनाओं में एक विलक्षण मृदुता और सौष्ठव मिलता है । युगबोध के अनुसार अपनी काव्यभूमि का विस्तार करते रहना पंत की काव्य-चेतना की विशेषता है । वे प्रारंभ में प्रकृति सौंदर्य से अभिभूत हुए, फिर मानव सौंदर्य से । मानव सौंदर्य ने उन्हें समाजवाद की ओर आकृष्ट किया । समाजवाद से वे अरविन्द दर्शन की ओर प्रवृत्त हुए । वे मानवतावादी कवि थे, जो मानव इतिहास के नित्य विकास में विश्वास करते थे । वे अतिवादिता एवं संकीर्णता के घोर विरोधी रहे । उनका अंतिम काव्य 'लोकायतन' है जो उनके परिपक्व चिंतन को समेट देता है । उनकी प्रमुख काव्यकृतियाँ हैं - 'उच्छ्वास', 'पल्लव', 'वीणा', 'ग्रंथि', 'गुंजन', 'युगांत', 'युगवाणी', 'ग्राम्या', 'स्वर्णधूलि', 'स्वर्णकिरण', 'युगपथ', 'चिदंबरा' आदि । पंतजी ने नाटक, आलोचना, कहानी, उपन्यास आदि भी लिखा । 'चिदंबरा' पर उन्हें 'भारतीय ज्ञानपीठ' भी मिला ।

प्रकृति सौंदर्य की कविता के लिए विख्यात कवि की रचनाओं में यह कविता हिंदी की यथार्थवादी कविता के एक नये उन्मेष की तरह है । प्रख्यात छायावादी कवि सुमित्रानंदन पंत की यह प्रसिद्ध कविता उनकी कविताओं के संग्रह 'ग्राम्या' से संकलित है । यह कविता आधुनिक हिंदी के उत्कृष्ट प्रगीतों में शामिल की जाती है । अतीत के गरिमा-गान द्वारा अब तक भारत का ऐसा चित्र खींचा गया था जो ऐतिहासिक चाहे जितना रहा हो, वर्तमान को देखते हुए वास्तविक प्रतीत नहीं होता था । धन-वैभव, शिक्षा-संस्कृति, जीवनशैली आदि तमाम दृष्टियों से पिछड़ा हुआ, धुँधला और मटमैला दिखाई पड़ता यह देश हमारा वही भारत है जो अतीत में कभी सभ्य, सुसंस्कृत, ज्ञानी और वैभवशाली रहा था । कवि यहाँ इसी भारत का यथातथ्य चित्र प्रस्तुत करता है ।

भारतमाता

भारतमाता ग्रामवासिनी
खेतों में फैला है श्यामल
धूल-भरा मैला-सा आँचल
गंगा-यमुना में आँसू-जल
मिट्टी की प्रतिमा
उदासिनी !

दैन्य जड़ित अपलक नत चितवन,
अधरों में चिर नीरव रोदन,
युग-युग के तम से विषण्ण मन
वह अपने घर में
प्रवासिनी !

तीस कोटि सन्तान नग्न तन,
अर्ध क्षुधित, शोषित, निरस्त्रजन,
मूढ़, असभ्य, अशिक्षित, निर्धन,
नत मस्तक
तरु-तल निवासिनी !

स्वर्ण शस्य पर-पद-तल लुंठित,
धरती-सा सहिष्णु मन कुंठित,
क्रन्दन कंपित अधर मौन स्मित,
राहु ग्रसित
शरदेन्दु हासिनी !

चिंतित भृकुटि क्षितिज तिमिरांकित,
नमित नयन नभ वाष्पाच्छादित,
आनन श्री छाया-शशि उपमित,
ज्ञात मूढ
गीता प्रकाशिनी !
सफल आज उसका तप संयम,
पिला अहिंसा स्तन्य सुधोपम,
हरती जन-मन-भय, भव-तम-भ्रम,
जग-जननी
जीवन-विकासिनी !

बोध और अभ्यास

कविता के साथ

1. कविता के प्रथम अनुच्छेद में कवि भारतमाता का कैसा चित्र प्रस्तुत करता है ?
2. भारतमाता अपने ही घर में प्रवासिनी क्यों बनी हुई है ?
3. कविता में कवि भारतवासियों का कैसा चित्र खींचता है ?
4. भारतमाता का हास भी राहुग्रसित क्यों दिखाई पड़ता है ?
5. कवि भारतमाता को गीता प्रकाशिनी मानकर भी ज्ञानमूढ़ क्यों कहता है ?
6. कवि की दृष्टि में आज भारतमाता का तप-संयम क्यों सफल है ?
7. **व्याख्या करें -**

   (क) स्वर्ण शस्य पर-पद-तल लुंठित, धरती-सा सहिष्णु मन कुंठित

   (ख) चिंतित भृकुटि क्षितिज तिमिरांकित, नमित नयन नभ वाष्पाच्छादित

कविता के आस-पास

1. भारत अथवा भारतमाता पर लिखी गयी जयशंकर प्रसाद और निराला की कुछ प्रमुख कविताएँ एकत्र कीजिए और स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर विद्यालय की गोष्ठी में उनका पाठ कीजिए ।
2. फणीश्वरनाथ रेणु के प्रसिद्ध उपन्यास 'मैला आँचल' का नामकरण इसी कविता से प्रेरित है । शिक्षक से यह मालूम करने की कोशिश करें कि दोनों रचनाओं में क्या समानता है ?
3. पंत छायावादी कवि हैं । अपने शिक्षक से मालूम करें कि छायावाद क्या है और इसके प्रमुख कवि कौन-कौन हैं ?

भाषा की बात

1. कविता के हर अनुच्छेद में विशेषण का संज्ञा की तरह प्रयोग हुआ है । आप उनका चयन करें एवं वाक्य बनाएँ ।
2. **निम्नांकित के विग्रह करते हुए समास स्पष्ट करें –**

   ग्रामवासिनी, गंगा-यमुना, शरदेन्दु, दैन्यजड़ित, तिमिरांकित, वाष्पाच्छादित, ज्ञानमूढ़, तपसंयम, जन-मन-भय, भव-तम-भ्रम
3. कविता से तदभव शब्दों का चयन करें ।
4. कविता से क्रियापद चुनें और उनका स्वतंत्र वाक्य प्रयोग करें ।

शब्द निधि

श्यामल : साँवला
दैन्य : दीनता, अभाव, गरीबी
जड़ित : स्थिर, चेतनाहीन
नत : झुका हुआ
चितवन : दृष्टि
चिर : पुराना, स्थायी
नीरव : नि:शब्द, ध्वनिहीन
तम : अंधकार
विषण्ण : (विषाद से निर्मित विशेषण) विषादमय
प्रवासिनी : विदेशिनी, बेगानी
क्षुधित : भूखा
निरस्त्रजन : निहत्थे लोग
शस्य : फसल
तरु-तल : वृक्ष के नीचे
पर-पद-तल : दूसरों के पाँवों के नीचे
लुंठित : रौंदा जाता हुआ
सहिष्णु : सहनशील
कुंठित : रुका हुआ, रुद्ध, गतिहीन
क्रंदन : रुदन, रोना
अधर : होठ
स्मित : मुस्कान
शरदेन्दु : शरद ऋतु का चन्द्रमा
भृकुटि : भौंह
तिमिरांकित : अंधकार से घिरा हुआ
नमित : झुका हुआ
वाष्पाच्छादित : भाप से ढँका हुआ
आनन-श्री : मुख की शोभा
शशि-उपमित : चंद्रमा से उपमा दी जानेवाली
स्तन्य : स्तन का दूध

❑❑❑